1

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): PRITESH SINGH RAJPUT

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04, 13/07/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]: 7 7 0 6 5 1 1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)*	पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)*

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ प्रस्तुत गद्य नाट्यकार 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है।

प्रसंग उपरोक्त गद्यांश स्कंदगुप्त और देवसेना के मध्य प्रेम के भावनाओं को लेकर कही गई है।

व्याख्या :-

अंतिम खण्ड में स्कंदगुप्त और देवसेना के मध्य संवाद में देवसेना स्कंदगुप्त से कहती है कि एक होने से अच्छा हमारा मित्र बनके रहने में है। मुझे पता है कि तुम मेरे लिये अपनी प्राणों को दांव में लगाकर मेरे प्राण बचा लोगे,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मैं भी सभी त्याग तुम्हारे लिये कर सकता हूँ। देवसेना पूछती है कि क्या हम पिंजरे में बंद होकर आत्मा का विकास कर पायेंगे। हमारे एक साथ होने पर हम आत्मा का विकास नहीं कर पायेंगे। ऐसा कुछ प्राणी ही कर पाते हैं।

विशेष

1. देवसेना के 'प्लूटोनिक प्रेम' का वर्णन वर्णन है।
2. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है – छोटे से पिंजरे
3. आत्मा - परमात्मा की बात, परलोकवाद का भान कराती है।
4. भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'प्रेमचंद' जी के यथार्थवादपर आधारित रचना 'गोदान' से लिया गया है।

प्रसंग - धन के महत्व पर प्रकाश डाला गया है तथा धनबल को ज्यादा अहमियत देने की बात कहीं गई है।

व्याख्या - मिस मालती कहती है कि इस नई सभ्यता का आधार धन है यह विद्या व सेवा तथा कुल के सामने श्रेष्ठ है किंतु अपवाद में आंदोलन से कम है। वह स्वयं कहती है कि मैं गरीबों से पहले कार से आनेवाली महिला की सेवा पहले करती हूं क्योंकि वह धन की देवी के समान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① धन का महिमा मण्डन किया गया है।

② यह स्पष्ट होता है कि जिसके पास धन है उसकी पूजा होती है।

③ वर्तमान में भी धन का महत्व बढ़ा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

प्रसंग - मल्लिका और प्रियंगुमंजरी के मध्य के संवाद में कविता का महत्व बताया गया है।

व्याख्या - प्रियंगुमंजरी ~~कहा~~ मल्लिका से कहती है कि कवित्व वर्णात्मक चित्र है, कविता से ही भावपूर्ण गीत-संगीत गाया जाता है। कविता से ही व्यक्ति और समाज असत्य से सत्य की ओर, जड़ से चेतना की ओर तो बाह्य जगत से अंतर्जगत की ओर जाया जा सकता है।

विशेष -

① कविता के महत्व का गुणगान किया गया है।

② भाषा सरल व प्रवाहपूर्ण है।

③ ~~कवि~~ रचनाकार ने अपना दर्शन का भरा प्रस्तुत किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(५) प्रश्नवाचक के माध्यम से संवाद को प्रभावी बनाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे जबान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा जालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'एक दुनिया समानांतर' की कहानी संग्रह 'गुल्की बन्नो' से लिया गया है।

प्रसंग - गद्यांश में दूसरी पत्नी की सेवा करने पति द्वारा गुल्की बन्नो को घर से ले जाने की घटना है।

व्याख्या - गुल्की बन्नो का पति गुल्की को लेने उसके घर जाता है और कहता है. इसे लेके जा रहा लेकिन समझा दो मेरे घर रहेगी तो दासी बनकर दूसरी पत्नी की सेवा करेगी. उसका बच्चा को सम्हालेगी. घर का काम करेगी किंतु यदि जबान लड़ायेगी तो अबकी बार प्राण ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष –

① नारी के शोषण का सूक्ष्म अंकन किया गया है।

② पुरुष - महिला में शादी के असमानता को पदर्शित करता है।

③ पुरुष मानसिकता को चित्रित किया गया है।

④ भाषा सरल सहज है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में उपन्यास और कहानी लेखन में शीर्ष लेखक हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज के सभी वर्गों को लेकर समाज में व्याप्त समस्याओं पर साहित्य लिखे जो आज भी अपनी प्रासंगिकता रखता है।

प्रेमचंद की कालजयी रचना 'गोदान' में प्रमुख समस्या किसान का शोषण व उसकी आर्थिक तंगी है जो आज के दौर में और भी संकटमय हो गया है किसानों की आत्महत्या इसका प्रतीक है।

सद्गति, कफन में दलितों का शोषण भी दिया गया है कि कैसे दलितों को दबाया जाता है उनका शोषण किया जाता है. सद्गति में तो दुखी चमार की मृत्यु भी हो जाता है किंतु उच्च वर्ग में संवेदनहीनता बनी ही –

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रहती है। कुछ सालों बाद भारत में विभत्स बेल्ही ~~कांड~~ ~~की~~ कांड होती है जो प्रेमचंद जी के भविष्य को परखने की दृष्टिकोण को सच साबित कर दिया। आज भी दलितों की स्थिति कुछ खास नहीं है।

'गोदान' में राजनीति में भ्रष्टाचार और धनतंत्र की राजनीति का तत्व डाला गया है। आज सबसे ज्यादा भ्रष्ट राजनीति ही है। गोदान में रायसाहब का कथन है–

'मेरा डेमोक्रेसी से भरोसा टूट चुका है।"

महिलाओं की स्थिति भी प्रेमचंद द्वारा दिखाया गया है जिसमें धनिया जैसे साहसी महिला है तो बेमेल विवाह के शिकार सीलिया, बाल विवाह का दंश सोना व रूपा को झेलना पड़ा। आज भी भारत में यह स्थिति जारी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बूढ़ी काकी के माध्यम से समाज में होने वाली वृद्ध शोषण पर व्यंग्य भी किया गया है। मानव कैसे अपने ही माता-पिता के प्रति ~~इस~~ मानसिकता धारण किये हुए हैं। आज भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनाथ आलयों में 'बूढ़ी काकी' जैसे चरित्र स्वभाविक रूप से मिल जायेंगे।

'पूस की रात', गोदान में किसानों को जमींदार के ऋण कुचक्र में फंसे दिखाया गया है। रु. कैसे समय के साथ 100 रु. का ऋण हो जाता है, वहीं शोषण का पर्याय बन जाता है। वर्तमान में जमींदारों का स्थान समाज में साहूकार और धनवान लोगों ने ले लिया है।

होरी और गोबर के पीढ़ीगत संघर्ष भारत में हर घर में दिख जायेगा। इंटरनेट की दुनिया तथा पल-पल बदलती तकनीक ने इस द्वन्द्व को और बढ़ा दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद जी ने इसे इस प्रकार पेश किया –

होरी – ईश्वर ने जब किस्मत में शोषण ही लिखा है तो क्या कर सकते हैं।

गोबर – मजूरी करने वाला भी हमसे अच्छा खाता पहनता है. किसानी में शोषण ही है।

इसके साथ ही प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में नगर के उद्योगों में होने वाला शोषण, जातिवाद, वर्णव्यवस्था इत्यादि पर भी रचनाएं लिखे हैं जो भविष्य की भी है। अतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद देश-काल से परे रचनाकार हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1951ई में भारत के आजादी के बाद आजादी की जैसी रूप जनता द्वारा कल्पना किया गया वैसा नहीं मिला। 1970-80वीं के दशक में आजादी की मोह भंग समाप्त हो गया और मध्यम वर्ग की उत्पत्ति तथा बढ़ते औद्योगीकरण से लोगों में अजनबीपन, आत्मविलगता तथा अकेलेपन की भावना पनपने लगी।

इसी आधार पर एक दुनिया समानांतर की 'खोई हुई दिशाएं' अपनी प्रस्तुती देता है। यह नई कहानी की प्रतिनिधि कहानी है जो पश्चिम में चलने वाली 'न्यू स्टोरी मूवमेंट' का प्रभाव भारत में पड़ने पर उद्भित हुआ था।

'खोई हुई दिशाएं' में मुख्य नायक 'चंदर' दिल्ली में काम करता है वह अपनी गांव छोड़कर यहाँ आया लेकिन उसे यहाँ अकेलापन, अजनबीपन ही दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ऐसा कोई भी नहीं मिलता जो उसे अपना लगे, वे सोचता है —

"यह राजधानी अपनी है, लोग अपने हैं, सब कुछ अपना है लेकिन सभी पराये लग रहे हैं।"

नई कहानी की मनोवैज्ञानिक चिंतन तथा द्वन्द्व को भी दिखाया गया है जिसमें चंदर अपने अस्तित्व को ~~लेकर~~ लेकर मानसिक द्वन्द्व में रहता है। वह रात में ही अपने पत्नी को जगाकर पूछता है —

"क्या मुझे तुम जानती हो, मैं कौन हूँ?"

इस प्रकार नई कहानी में बाह्य जगत के स्थान पर मनुष्य के अंतर्जगत का लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था जिसकी प्रतिनिधि कहानी के रूप में 'खोई हुई दिशाएं' है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

रंगमंच नाटक के लिये दृश्य रूप प्रदान करता है जिसमें रंगकर्मियों, संगीत, पर्दो, प्रकाश के माध्यम से नाटक का मंचन किया जाता है।

रंगमंचीयता की दृष्टि से भारतेंदु एवं निराला पहले ही अपनी कृति प्रस्तुत कर चुके थे किंतु मोहन राकेश रंगमंच को एक नया रूप प्रदान किये जिसमें बिना अधिक मेहनत के सरलता पूर्वक नाटकों को ~~मंचित~~ मंचित किया जा सकता है।

'आषाढ़ का एक दिन' की रचना मोहन राकेश द्वारा रंगमंच को ध्यान में रखकर ही किया गया है। इसकी मौलिक रंगमंचीयता को निम्नलिखित तथ्यों से समझ सकते हैं—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

① 'आषाढ़ का एक दिन' में केवल 3 खण्ड है इसमें वातावरण भी सामान्य रखा गया है –

- खण्ड 1 में दो दीपक जल रहा है एवं खाट में चादर बिछी है।
- खण्ड 2 व 3 में दो दीपक में एक ही जलता है एवं चादर थोड़ी फटी रहती है।

② रंगसंकेत अत्यधिक दिया गया है, पहले खण्ड में डेढ़ पृष्ठ रंगसंकेत पश्चात पहला संवाद आता है।

③ दृश्य भी कम है, मल्लिका, कालिदास और विलोम का दृश्य ही प्रमुख है।

④ द्वन्द्व का भी विशेष ध्यान रखा गया है जैसे: अभी कालिदास का मंच पर आने पर ही विलोम उसके सामने मंच पर आता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑤ संवाद छोटे, चुस्त और सरल है जो दर्शकों को बोरियत में नहीं डालता।

⑥ भाषा सरल, सहज और प्रभावपूर्ण है जो नाटक को भटकाव व बिखरने से रोकता है।

⑦ किसी भी निर्देशक द्वारा सस्ते व सरलता से इसे मंचित किया जा सकता है।

किंतु कहीं-कहीं संवाद थोड़े लम्बे हो गये है जैसे अम्बिका' मल्लिका - कालिदास संवाद, नाटक में प्रतीकात्मकता होने से बोधगम्यता में कमी आती है।

लेकिन मोहन राकेश द्वारा रंगमंचीयता में जो योगदान दिया गया तथा 'आषाढ़ का एक दिन' में जो मौलिक तत्वों का समावेश कर नाटक को रंगमंच की दिशा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ने अर्श से फर्श तक ले जाता है, इसके लिये मोहन राकेश सदैव स्मरणीय रहेंगे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद जिस समय रचना करते रहे उसके अंतिम समय में पश्चिम में मनोविज्ञान रचना का लेखन चल रहा था भारत व प्रेमचंद पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

मनोविज्ञान का प्रयोग प्रेमचंद ने चरित्रों के द्वन्द्व को दर्शाने, व्यंग्य करने तथा चिंतन-मनन में करते हैं। गोदान में होरी के मन में भी कृषि के प्रति विद्रोह आता है लेकिन गोबर को शांत करने विद्रोह को दबाकर कहता है— जिसे प्रेमचंद ने कुछ इस तरह व्यक्त किया—

"होरी के मन में भी यही भाव आ रहा था किंतु लड़के के विद्रोह को शांत करने होरी कहता है कि—"

प्रेमचंद ने चरित्रों का चित्रण भी मनोवैज्ञानिक ढंग से किये हैं। वे मालती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के चरित्र को कुछ इस तरह बताते हैं—
"मालती बाहर से तितली है और
अंदर से मधुमक्खी" (खन्ना जाय)

प्रेमचंद 'बूढ़ी काकी' में बूढ़ों की मन की बात को मनोविज्ञान से प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि—
"बूढ़ों की सारी इच्छाएँ उनके जीभ
पर आ जाती हैं।"

प्रेमचंद के मनोविज्ञान क्षमता का ही परिणाम है कि उनके यथार्थवादी चरित्र केवल अच्छे या केवल बुरे नहीं बल्कि अच्छे और बुरे दोनों होते हैं।

किंतु प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यास में मनोविज्ञान का प्रयोग मनोविज्ञान को केन्द्रीय आधार बनाकर नहीं किया है,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बल्कि चरित्रों को यथार्थस्वरूप देने तथा उनके मन में चलने वाले विचारों को प्रस्तुत करने के लिये किये हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'भारत-दुर्दशा' से लिया गया है जिसके रचयिता 'भारतेंदु हरिश्चन्द्र' हैं।

प्रसंग - जब नाटक में अंधकार का प्रवेश होता है तब अंधकार द्वारा यह कथन कहा जाता है।

व्याख्या - अंधकार स्वयं अपना परिचय देते हुए कहता है कि ~~उसका~~ मेरा जन्म शिव से तमोगुण रूप में हुआ है। ~~आध~~ अंधकार के बिना चोर, उल्लू, दुष्ट लोग बाहर नहीं निकल सकते। वह बताता है कि वह गुफा, दुखियों के आँख और खाली मस्तिष्क में रहता है। अंधकार से हृदय व प्रत्यक्ष

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संकट में पड़ जाते हैं। वह अपने ही रूप आध्यात्मिक अंधकार व अज्ञानता रूपी अंधकार में बताता है।

विशेष —

① यह एक व्यंग्य है जिसके माध्यम से देशभक्ति की अलख जलाने का प्रयास किया गया है।

② चरित्र का परिचय स्व परिचय शैली से किया गया है।

③ यह प्रतीकात्मक है जो भारत के आंतरिक अंधकार को प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है।

④ भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग ज्यादा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश ऐतिहासिक कल्पना पर आधारित रचना 'दिव्या' से लिया गया है।

प्रसंग - पृथुसेन द्वारा यवन राजकुमारी से विवाह नहीं करने व 'दिव्या' के प्रति प्रेम भाव में लिप्त रहने पर उसके पिता द्वारा पृथुसेन को यह कथन कहा जाता है।

व्याख्या - पृथुसेन से उसके पिता कहते है कि तुम मेरे द्वारा बनाई गई सम्पत्ति बल, धन और अवर्ण होते हुए भी राज्य में अपनी स्थिति सभी को एक युवती (दिव्या) के प्रति मोह में नष्ट कर दोगे। चाणक्य का उदाहरण देकर कहते हैं कि स्त्री भोगने की वस्तु है उसके लिये अपनी बलि नहीं किया जाता है। यदि नारी के मोह में ही पड़े रहोगे तो सब

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नष्ट हो जायेगा. अपना मति को भ्रम में डालकर मोह में मत पड़ो। नारी पतन का द्वार होता है।

विशेष -

(1) पुरुषों के नारियों के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण को दिखाता है।

(2) नारी को पतन का द्वार कहना पुरुषों के (पृथुसेन के पिता जैसे लोग) की मनोदशा की संकिर्णता प्रदर्शित करता है।

(3) "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि" चाणक्य के इस कथन का उदाहरण के रूप में सटिक प्रयोग हुआ है।

(4) भाषा तत्समी है किंतु पाठक के साथ तादात्म्य जुड़ जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दुध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ – उक्त गद्यांश उपन्यास के कालजयी रचना 'गोदान' से लिया गया है जिसके लेखक उपन्यास सम्राट 'प्रेमचंद' हैं।

प्रसंग – जब होरी की मृत्यु आसन्न होती है तो होरी की सभी भूतकाल की घटनाएँ एवं उसकी इच्छाएं आंखों के सामने आ जाता है।

व्याख्या - जब व्यक्ति मृत्युशैय्या पर पड़ा होता है तो उसे असंख्य चलचित्र दिखते है जिसमें भूत व भविष्य के इच्छाओं का समावेशन होता है। होरी को भी अपनी बचपना, बाल रूप की क्रीड़ा तथा अपनी मां की याद आ जाती है। उसके सबसे प्रिय धनिया और गोबर भी दिख जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धुनिया दुल्हन तो गोबर आदर्श पुत्र की भाँती आता है। इसकी गाय खरीदने की इच्छा भी प्रबल रूप से दिखता है।

विशेष —

① मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग किया गया है. सभी चित्र गोब होरी के मन में उत्तरोत्तर रूप से चलती है।

② यह दिखाया जा रहा है कि जो वास्तविक में पूर्ण नहीं हुआ वह स्वप्न में मृत्यु के समय पूर्ण हो गया जैसे - गाय खरीदना

③ भाषा - सरल - सहज व प्रभावकारी है।

④ विराम चिन्हों के प्रयोग ने पाठ्यता को प्रभावी बनाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' 1954 ई. में आंचलिक रचनाओं के महारथी फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिया गया है। मैला आँचल की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि इसकी भाषा - शैली है।

रेणु ने मैला आँचल की आंचलिकता को स्थायित्व प्रदान करने देशी और तद्भव भाषा का प्रयोग किया -

तहसीलदार की बेटी कमली जब गमकउआ साबुन लगाकर नहाती है तो पूरा गाँव - गाँव गम - गम हो जाता है।

अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है किंतु उसमें देशीपन का तड़का लगाया गया है —

जैसे — टेसन (स्टेशन). लायबरेली (लाइब्रेरी) भैंसचरमन (वायस चेयरमैन)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गाँव की प्रकृति के अनुसार भाषा में लोकगीतों व लोकसंगीतों का भी समावेशन किया गया है। जिसमें बिरापद गीत, जाट-जट्टीन का खेल भी है—

" नायक जी हो नायक जी,
खोल देहुँ किवड़िया हो नायक जी।"

भाषा में मुहावरों का प्रयोग भी ~~सटीकता~~ सटिकता से किया गया है—
"ऐसी ठंड में तो बाघ के दांत भी कैं हो जाता है।"

रेणु जी ने भाषा के उपयोग में स्थानियता के साथ एक प्रयोग भी किये हैं जिसमें चरित्रों के माध्यम से भाषा का प्रयोग किया गया है।

जैसे- गाँव के व्यक्ति आँचलिक भाषा का प्रयोग करते है एवं पढ़े-लिखे लोग (ममता, डॉ प्रशांत) अपनी भाषा (हिन्दी) का प्रयोग करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके साथ ही रेणु जी अपने रचना में प्रतीकात्मक भाषा, व्यंग्य भाषा, का भी प्रयोग कहीं-कहीं किये हैं।

रेणु जी के इसी भाषा शैली के कारण आँचलिक साहित्य की श्रेणी में 'मैला आँचल' अभी भी सर्वश्रेष्ठ कृति में शुमार गिना जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

'यही सच है' नई कहानी की प्रसिद्ध कहानी है जिसके लेखक मन्नु भण्डारी है। यह कहानी दीपा को आधार बनाकर लिखा गया है।

यह कहानी 1970 की दशक में आत्मनिर्वासन व टूटने के परिस्थितियों में दीपा के कानपुर - कोलकाता व पुनः कानपुर तीन स्थानों पर उसके पहले प्यार निशिथ और दूसरे प्यार पर आधारित है।

मन्नु जी द्वारा यह डायरी शैली में लिखा गया है, जिसमें दीपा के मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण किया गया है। दीपा पहले प्यार व दूसरे प्यार के मध्य द्वन्द्व में रहती है, वह निशिथ को भूल नहीं पाती तथा मनोस्वभाव के अनुरूप क्षिप्रतारहित नहीं होते हुए कोलकाता में जब निशिथ से मिलती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है तो पुनः प्यार को जमा लेती है किंतु निशीथ के तरफ से सकारात्मक जवाब न मिलने पर इसे प्यार की कीमत व अहमियत को समझती है जिसे वह मन से प्रेम करती है।

इस कहानी की भाषा-शैली सरल सपाट और चुस्त है, कहीं भी अवांतर कथा न होने से बिखराव नहीं होता। भाषा में कहीं-कहीं बोल्डनेस दिखता है जिसके लिये मन्नु भण्डारी जानी जाती है।

इस कहानी में तीन ही मुख्य पात्र है जिसका केन्द्रिय पात्र दीपा है। यह पूरी कहानी दीपा के द्वारा ही कहा गया है जिसमें चेतना प्रवाह साफ झलकती है और यह कहानी को पाठकों के साथ जोड़े रहता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किंतु डायरी शैली में होने के कारण दीपा के अलावा अन्य चरित्रों की केवल बाह्य चरित्र ही प्रभावी प्रस्तुत हो पाते हैं उनके आंतरिक भावना नहीं।

इसके बाद भी मन्नु भण्डारी ने जिस प्रकार से दीपा के माध्यम से एक नारी को प्रमुखता देकर मनोवैज्ञानिक रचना किया गया वह नारी उत्थान में एक प्रभावी कदम साबित हुआ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'एक दुनियां समानांतर' की सबसे अच्छी व प्रसिद्ध रचना 'टूटना' जिसके रचनाकार 'राजेन्द्र यादव' हैं।

'टूटना' कहानी नई कहानी की प्रतिनिधि कहानीयों में से एक है जिसमें 'नई कहानी' के समय की परिस्थितियों का उल्लेख है।

इस कहानी में महिलाओं के अधिकार मांगने तथा बढ़ती शहरीकरण, और विवाह की गिरती मूल्य को एक साथ समेटा गया है। जब महिलाएँ समाज में अपने अधिकार मांगे पुरुषवादी सोच को गहरा धक्का लगा और महिला पुरुष झगड़े बढ़ते गये जिसका परिणाम तलाक के रूप में सामने आया।

इस कहानी में नायक के मन में नायिका को लेकर 'नई कहानी' के समय का द्वन्द्व दिखाई देता है—

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"कितनी क्रूर महिला है जो यह पत्र लिखते समय भी घबराई नहीं --- हो सकता है हाथ लड़खड़ाई होगी नहीं तो वह बेचारी ऐसा पत्र कैसे लिख सकती है और नायक के आंखों से आंसू बहकर गालों में आ गया।"

नायक-नायिका के तलाक का सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चे पलाश पर पड़, जब कोर्ट में तलाक लिया जा रहा था तो लेखक ने इसे बेहद प्रतिकात्मक तरीके से प्रस्तुत किया।

"तभी एक चिड़िया पंखे से टकराकर नीचे गिरा, मर गया शायद नहीं तड़प रहा है, इससे अच्छा मर जाना चाहिये था, और तलाक पेपर में हस्ताक्षर हो गया।"

'नई कहानी' में समाधान का चित्र प्राय: नही होता है, 'टूटना' में भी समाधान नजर नहीं आता है, क्योंकि रचनाकारों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का मानना है कि जब वास्तविक जीवन में समाधान नहीं तो स्वप्न में क्यों।

अतः 'दूल्हा' में भी यह समाधान के बिंदु दिखाई नहीं देता, चिड़िया रूपी पलाश अधमरा होकर कैसे जीवन व्यतीत किया होगा इसकी जानकारी नहीं हो जाती है।

'दूल्हा' यह कहानी नई कहानी के सभी विशेषताओं को समेटकर हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~'दिव्या' उपन्यास मार्क्सवादी रचनाकार यशपाल द्वारा लिखा गया है। जिसका केन्द्रीय पात्र 'दिव्या' है। यह उपन्यास एक~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान मे प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation